DR.BACHHA KUMAR RAJAK
B.M.COLLEGE RAHIKA MADHUBANI
B.COM PART-I

लेखांकन का अर्थ एवं क्षेत्र
[MEANING AND SCOPE OF ACCOUNTING]

लेखांकन का अर्थ
(MEANING OF ACCOUNTING)

लेखांकन व्यापार की भाषा है। लेखांकन का आशय मौद्रिक लेन-देनों का लेखा करना, वर्गीकृत करना, निष्कर्ष निकालना, विश्लेषण और निर्वचन करना है। इसका उद्देश्य एक निश्चित अवधि के बाद व्यापार की आर्थिक घटनाओं को संख्यात्मक रूप देकर इन घटनाओं के आधार पर संख्यात्मक वित्तीय परिणाम की गणना करना तथा सम्बन्धित पक्षों को व्याख्यात्मक तथा वस्तुपरक आर्थिक सूचनाएं देना है। लेखांकन एक विस्तृत धारणा है, इसमें वित्तीय लेखांकन, लागत लेखांकन, प्रबन्धकीय लेखांकन, कर लेखांकन और सरकारी लेखांकन भी सम्मिलित हैं। Accounting is a broad term, it includes also Financial Accounting, Cost Accounting, Management Accounting, Tax Accounting and Government Accounting.)

लेखांकन का कार्य तलपट बनाने से आरम्भ होता है और अन्तिम खाता बनाने तक जाकर समाप्त हो जाता है। लेखांकन वहीं से प्रारम्भ होता है जहां पुस्तपालन का कार्य समाप्त हो जाता है (Accounting starts where Book-keeping ends)। आर. एन. एन्थोनी के अनुसार, “लेखाकर्म में पुस्तपालन भी सम्मिलित है।" लेखांकन का सैद्धान्तिक पक्ष “कला" और उसका व्यावहारिक पक्ष “विज्ञान" रहने से यह कला और विज्ञान दोनों है।

लेखांकन की परिभाषा
(DEFINITIONS OF ACCOUNTING)

लेखांकन की परिभाषा के विषय में विद्वानों में सदैव मतभेद रहा है। इस कारण इसकी कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती है। विभिन्न विद्वानों ने लेखांकन की परिभाषा निम्नलिखित प्रकार दी है :

1) आर. एन. एन्थोनी के अनुसार, “लेखा विधि पद्धति व्यवसाय से सम्बन्धित सूचनाओं को मौद्रिक रूप में एकत्रित करने, सारांश बनाने, विश्लेषण करने तथा जानकारी देने का साधन है।"

2) स्मिथ और एशबर्न के अनुसार, “लेखांकन आर्थिक क्रियाओं के परिणामों को माप करने और प्रतिवेदन देने का एक साधन है।

3) बियरमैन और डर्बिन के अनुसार, “लेखांकन का अर्थ वित्तीय सूचनाओं की पहचान, आय, लेखा एवं सम्प्रेषण करना है।

आदर्श परिभाषा (Ideal Definition)—लेखांकन निश्चित अवधि के बाद वित्तीय स्थिति के परिवर्तनों और लेन-देनों को लिखने, वर्गीकृत करने, निष्कर्ष निकालने, विश्लेषण और निर्वचन करने की कला और विज्ञान है, जिसके द्वारा वित्तीय स्थिति की गणना कर वित्तीय परिणामों को निकाला जाता है। इसके अन्तर्गत तलपट, निर्माण खाता, व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा का निर्माण किया जाता है।

"Accounting is a means of collecting, summarising, analysing and reporting in monetary terms, informations about business."

-R. N. Anthony 2 "Accounting is a means of reporting the results of economic activities."

-Smith and Ashburne - 3 "Accounting may be defined as identifying, measuring, recording and communicating of financial results."

-Bierman and Derbin:

लेखांकन की विशेषताएं या तत्व
(CHARACTERISTICS OR ELEMENTS OF ACCOUNTING)

लेखांकन की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं या तत्व हैं

(1) पुस्तपालन पर आधारित (Based on Book-keeping)—व्यावहारिक दृष्टिकोण से पुस्तपालन की समाप्ति के बाद लेखांकन आरम्भ होता है। पुस्तपालन की क्रिया अर्थात् रोजनामचा और खातों की सूचनाओं के आधार पर लेखांकन किया जाता है।

(2) अंकों की पुनः सजावट (Re-arrangement of figures) लेखांकन के अन्तर्गत खातों के शेषों के आधार पर तलपट बनता है। तलपट के आधार पर निर्माण खाता, व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता, आर्थिक चिट्ठा, वित्तीय विवरण आदि बनते हैं।

(3) कला और विज्ञान (Art and Science) लेखांकन के सिद्धान्त और नियम निश्चित हैं जिनके प्रयोग के द्वारा आर्थिक परिणामों को निकाला जाता है। इस कारण लेखांकन कला और विज्ञान दोनों है।

(4) निश्चित समय (Fixed period) लेखांकन में परिणामों को एक निश्चित समय के बाद निकाला जाता है। यह अवधि एक कैलेण्डर वर्ष (1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक) या वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च तक) होती है।

(5) मौद्रिक लेन-देन (Monetary transactions) लेखांकन की क्रिया में मौद्रिक लेन-देनों को ही शामिल किया जाता है। अमौद्रिक तत्वों; जैसे प्रबन्धकों व कर्मचारियों की योग्यता, ईमानदारी तथा कार्यकुशलता की गणना नहीं की जाती है।

(6) व्याख्या (Interpretations)—लेखांकन के द्वारा आर्थिक परिणाम अर्थात् लाभ या हानि की गणना कर उनकी व्याख्या की जाती है। इससे वित्तीय स्थिति की जानकारी होती है।

(7) प्रयोग (Uses)-लेखांकन व्यवसाय की भाषा है। इसका प्रयोग वित्तीय एवं अन्य व्यावसायिक सूचनाएं व्यक्तियों, सरकार, वित्तीय संस्थाओं एवं समाज के अन्य वर्गों को प्रदान करने के लिए किया जाता है।

लेखांकन की प्रकृति
(NATURE OF ACCOUNTING)

लेखांकन की निम्नलिखित प्रकृति होती है :

(1) लेखांकन : एक पेशा (Accounting : A Profession)—आधुनिक समय में लेखांकन एक पेशा का रूप धारण कर चुका है। लेखांकन का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त व्यक्ति को लेखापाल या चार्टर्ड एकाउन्टेंट कहते हैं।

(2) लेखांकन : एक बौद्धिक विषय (Accounting : An Intellectual Discipline)—लेखांकन का विशिष्ट ज्ञान का स्वरूप बौद्धिक है, जिसे सैद्धान्तिक अध्ययन तथा व्यावहारिक ज्ञान के द्वारा सीखकर उसमें विशिष्टता प्राप्त की जाती है।

(3) लेखांकन : एक सामाजिक शक्ति (Accounting : A Social Force) लेखांकन से प्राप्त सूचनाओं का प्रयोग व्यापार का स्वामी, लेनदार, देनदार, विनियोक्ता, जनता तथा सरकार अपने हित में करते हैं।

(4) लेखांकन : एक नीति निर्धारक शक्ति (Accounting : APolicy Making Force) लेखांकन के आधार पर मूल्य-निर्धारण, मूल्य-नियन्त्रण, मूल्य-नीति, व्यापार-नीति, क्रय-विक्रय-नीति, विनियोग-नीति आदि का निर्माण होता है। सरकार भी इसी के आधार पर आयात-निर्यात नीति, औद्योगिक नीति, उत्पादन नीति आदि का निर्माण करती है।

लेखांकन : कला है या विज्ञान या दोनों?
(ACCOUNTING : IS AN ART OR SCIENCE OR BOTH?)

लेखांकन कला है (Accounting is an Art)

"कला" किसी निश्चित उद्देश्य (लक्ष्य) की प्राप्ति हेतु किसी कार्य को निश्चित नियमों के आधार पर उचित ढंग से करने की प्रक्रिया है। व्यापार का मुख्य उद्देश्य (लक्ष्य) लाभ कमाना है। लाभ कमाने के लिए निश्चित तरीके से व्यावसायिक लेन-देन किये जाते हैं। इस आधार पर लेखांकन कला है। कारण :

(1) निश्चित सिद्धान्तों और नियमों के अनुसार लेखे किये जाते हैं। (2) ये लेखे किसी निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु लिखे जाते हैं। (3) ये लेखे नियमबद्ध, क्रमबद्ध, स्पष्ट, नियमित और उचित ढंग से लिखे जाते हैं।

(4) इनके सिद्धान्तों और नियमों को सरलतापूर्वक सीखकर इनको व्यावहारिक रूप दिया जाता है। लेखांकन विज्ञान है (Accounting is a Science)

"विज्ञान का तात्पर्य किसी विषय के नियमबद्ध, क्रमबद्ध, शुद्ध और स्पष्ट ज्ञान से है जिसमें किसी घटना के कारण और . परिणाम के बीच के प्रत्यक्ष सम्बन्ध का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला जाता है। इस आधार पर लेखांकन विज्ञान है।कारण :

(1) इनके सिद्धान्त और नियम क्रमबद्ध, नियमबद्ध, शुद्ध और स्पष्ट हैं।

(2) लेखों को करने की प्रक्रिया नियमबद्ध, क्रमबद्ध, शुद्ध और नियमित है।

(3) इनके सिद्धान्तों और नियमों के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष के बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।

(4) व्यापारिक घटनाओं का निष्कर्ष आर्थिक परिणाम अर्थात् लाभ-हानि होते हैं।

(5) निष्कर्ष की व्याख्या कर इनके कारण परिणाम को जाना जा सकता है। लेखांकन कला और विज्ञान दोनों है (Accounting is an Art and Science both) अमेरिकन संस्थान के प्रमाणित लोक लेखापालों की शब्दावली समिति (Committee on Terminology of American Institute of Certified Public Accountants) के अनुसार, "लेखांकन उन व्यवहारों एवं घटनाओं को मुद्रा के रूप में लिपिबद्ध करने, श्रेणीबद्ध करने, संक्षिप्तीकरण करने तथा उनके परिणामों की व्याख्या करने की कला है, जो कम से कम आंशिक रूप से वित्तीय प्रकृति के हैं।"

वस्तुतः लेखांकन कला और विज्ञान दोनों है जिसमें पुस्तपालन के अन्तर्गत बनाए गए अभिलेखों को पुनः क्रमबद्ध किया जाता है। इन पर आधारित वित्तीय विवरण बनाए जाते हैं और व्यापार पर उनके प्रभावों की व्याख्या की जाती है। (Accounting is both an art and science of re-arranging the accounts and records maintained by a Book-keeper and preparing financial statements, based on them and to interpret their effects on business.) V स्मिथ और एशबर्न के अनुसार, "लेखांकन प्रधान रूप से वित्तीय व्यवहारों और घटनाओं के लिखने का विज्ञान है और वित्तीय व्यवहारों एवं घटनाओं का महत्वपूर्ण सारांश बनाने, विश्लेषण करने, उनकी व्याख्या और परिणामों को उन व्यक्तियों तक पहुंचाने की कला है, जो उनके आधार पर निर्णय लेते हैं।"

लेखांकन का क्षेत्र
(SCOPE OF ACCOUNTING)

'लेखांकन का कार्य पुस्तपालन के कार्य के बाद आरम्भ होता है। इस दृष्टिकोण के आधार पर लेखांकन के निम्नलिखित कार्यक्षेत्र हैं

(1) पुस्तपालन की प्रविष्टियों की जांच करना।

(2) खातों के योगों तथा शेषों की जांच करना।

(3) खातों के शेष से तलपट बनाना।

(4) समायोजनाओं को लिखना।

(5) अन्तिम खाते (निर्माण-खाता, व्यापारिक-खाता, लाभ-हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा) बनाना।

(6) भूल-सुधार के लेखे करना।

(7) अन्तिम खातों का विश्लेषण कर उनके आधार पर निष्कर्ष निकालना।

वस्तुतः तलपट बनाने से अन्तिम खाते के विश्लेषण तक की क्रिया लेखांकन का क्षेत्र है। लेखांकन का कार्य करने के लिए विशेष ज्ञान और योग्यता का होना आवश्यक है।

लेखांकन के उद्देश्य
(OBJECTIVES OF ACCOUNTING).

लेखांकन के निम्नलिखित मुख्य उद्देश्य हैं :

1) अशुद्धियों पर नियन्त्रण (Control on Errors)-लेखांकन का मुख्य उद्देश्य लेखांकन के सिद्धान्तों के आधार पर पुस्तपालन के कार्यों की जांच कर अशुद्धियों को सुधारना है। इससे अशुद्धियों पर नियन्त्रण लगता है और भविष्य की त्रुटियों को भी रोका जाता है।

(2) शुद्ध लाभ/हानि की गणना करना (Calculation of Net Profit/Loss)-लेखांकन करने का उद्देश्य एक निश्चित अवधि के बाद लाभ-हानि खाता के निर्माण द्वारा व्यापार के शुद्ध लाभ या हानि की गणना करना है। व्यापार के आर्थिक परिणामों का प्रतीक शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि है।

3) समायोजन करना (To make Adjustment)—पुस्तपालन में केवल मौद्रिक लेन-देनों का लेखा होता है। लेखांकन के अन्तर्गत अदत्त व्यय, पूर्वदत्त व्यय, अप्राप्य ऋणों के लिए संचिति व छूट आदि का समायोजन लेखा कर व्यापार के शुद्ध लाभ या हानि को निकाला जाता है।

(4) वित्तीय स्थिति की जानकारी (Knowledge of Financial Position) लेखांकन में तलपट, व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्टे का निर्माण कर व्यापार की वित्तीय स्थिति की जानकारी ली जाती है। यदि व्यापार की पूंजी तथा दायित्व से सम्पत्तियां अधिक होती हैं तो व्यापार की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ मानी जाती है।

(5) कर-योग्य आय का निर्धारण (Determination of Taxable Income) लेखांकन के सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित आर्थिक चिट्ठा और आय विवरण से व्यापार और व्यापारी की कर-योग्य आय को निकाला जाता है। न्यायालय तथा आयकर विभाग भी इन लेखों को मान्यता देता है।

(6) वैधानिक उद्देश्य (Legal Objects) व्यापारी को अपने व्यापार पर आयकर, विक्रय कर, सम्पत्ति कर आदि देना पड़ता है। लेखांकन व्यापारी के इन वैधानिक उद्देश्यों को पूरा करता है।

(7) सम्बन्धित पक्षों को सूचना देना (To give information to related Parties) लेखांकन से व्यापार से सम्बन्धित पक्षों जैसे; लेनदार, देनदार, विनियोक्ता, प्रबन्धक, कर्मचारी, जनता और सरकार को व्याख्यात्मक और वस्तुपरक आर्थिक सूचनाएं मिलती हैं। इनके आधार पर वे अपने हितों के रक्षार्थ कार्य करते हैं।

(8) अंकेक्षण का आधार (Basis of Auditing)—पुस्तपालन के बाद लेखांकन का कार्य होता है। लेखांकन के कार्य की समाप्ति के बाद अंकेक्षण का कार्य होता है। अंकेक्षण का आधार लेखांकन है।

लेखांकन के आधुनिक कार्य
(MODERN FUNCTIONS OF ACCOUNTING)

आधुनिक विचारधारा (Modern approach) पर आधारित आधुनिक लेखांकन (modern accounting) का कार्य अब केवल अन्तिम खाते बनाने तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि अब यह सूचना पद्धति (information system) और निर्णय लेने की क्रियाओं (decision-making activities) का भी कार्य करता है। लेखांकन के निम्नलिखित आधुनिक कार्य हैं :

(1) रचनात्मक कार्य (Constructive Functions)—लेखांकन के रचनात्मक कार्य के अन्तर्गत आर्थिक, परिणामों को निकालना, अशुद्धियों को दूर करना, छल-कपट पर नियन्त्रण रखना और लेखांकन के सिद्धान्तों के आधार पर खातों को रखना है।

(2) अभिलेखन कार्य (Recording Functions)—लेखांकन के अभिलेखन कार्य के अन्तर्गत तलपट, निर्माण खाता, व्यापारिक भ-हानि खाता तथा आर्थिक चिट्ठा का निर्माण करना है।

(3) परीक्षात्मक कार्य (Auditive Functions)—लेखांकन के परीक्षात्मक कार्य के अन्तर्गत लेखों और खातों की जांच, वैधानिक खातों की जांच, आर्थिक चिट्ठा की जांच तथा वित्तीय विवरणों की जांच करना है।

(4) व्याख्यात्मक कार्य (Interpretative Functions)—लेखांकन के व्याख्यात्मक कार्य के अन्तर्गत वित्तीय विवरणों और आर्थिक प्रतिवेदनों को तैयार करना है। इसके लिए अनुपात-विश्लेषण, रोकड़-प्रवाह विवरण, कोष-प्रवाह विवरण आदि बनाये जाते हैं।

(5) सूचनात्मक कार्य (Informative Functions)—लेखांकन के सूचनात्मक कार्य के अन्तर्गत व्यापार से सम्बन्धित पक्षों को व्यापार के आर्थिक परिणामों की विवरणात्मक और वस्तुपरक आर्थिक सूचना दी जाती है। आर्थिक चिट्ठा और वित्तीय विवरणों के आधार पर आर्थिक सूचनाएं निर्मित होती हैं।

(6) वैधानिक कार्य (Legal Functions)–लेखांकन के वैधानिक कार्य के अन्तर्गत व्यापारिक अधिनियमों के अनुसार वैधानिक खातों का निर्माण किया जाता है। साथ ही करों के निर्धारण हेतु आयकर रिटर्न, बिक्री कर रिटर्न आदि विवरण भी बनाया जाता है।

(7) प्रबन्धकीय कार्य (Managerial Functions)—लेखांकन के प्रबन्धकीय कार्य के अन्तर्गत प्रबन्ध की आवश्यकताओं के अनुरूप आवश्यक सूचनाएं और आर्थिक विवरण बनाये जाते हैं। प्रबन्धकीय लेखाविधि की तकनीकों के द्वारा ये कार्य किये जाते हैं।

(8) सामाजिक कार्य (Social Functions)—लेखांकन के सामाजिक कार्य के अन्तर्गत देश और समाज के लिए व्यापार की वित्तीय स्थिति के विषय में आर्थिक सूचनाओं का निर्माण किया जाता है। सम्बन्धित पक्ष अपने हित में इन सूचनाओं का प्रयोग करते हैं।

लेखांकन का कार्य विशिष्ट शिक्षा प्राप्त योग्य अनुभवी लेखापाल (Accountant) के द्वारा होता है। बड़े व्यापारिक संस्थानों में यह कार्य चार्टर्ड एकाउन्टेंट (Chartered Accountant) करते हैं। वस्तुतः तलपट बनाने के बाद के सभी कार्य इसके अन्तर्गत आते हैं।